नईदुनिया

पारंपरिक और घरेलू उपायों से महिलाएं करती थी गर्भावस्था की पुष्टि

काहिरा

प्राचीन काल में महिलाएं अपने शरीर में होने वाले बदलावों के अलावा कुछ पारंपरिक और घरेलू उपायों का इस्तेमाल करके गर्भावस्था की पुष्टि करती थीं। प्राचीन मिस्र और रोम की महिलाओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले एक अनोखे तरीके में गेहूं और जौ के बीजों का उपयोग किया जाता था।

इस परीक्षण में महिला के यूरिन को गेहूं और जौ के बीजों पर डाला जाता था। अगर बीज अंकुरित हो जाते थे, तो इसे गर्भवती होने का संकेत माना जाता था। यह तरीका इतना लोकप्रिय था कि वैज्ञानिकों ने 1960 के दशक में इसका अध्ययन किया और पाया कि इसकी सटीकता लगभग 70 प्रतिशत तक हो सकती है।

इसके अलावा, पुराने समय में हकीम और वैद्य महिला की नब्ज देखकर भी गर्भावस्था का पता लगाते थे। वे महिला की कलाई पकड़कर उसकी धड़कनों को महसूस करते थे और मानते थे कि अगर नब्ज की गति सामान्य से तेज हो गई है, तो महिला गर्भवती हो सकती है।

हालांकि, यह तरीका पूरी तरह से वैज्ञानिक नहीं था, लेकिन उस समय इसे एक विश्वसनीय उपाय माना जाता था। महिलाएं अपने शरीर में होने वाले बदलावों को भी गर्भावस्था का संकेत मानती थीं।

इनमें पीरियड्स मिस होना, सुबह कमजोरी और उल्टी आना, अचानक थकान महसूस होना, स्तनों में बदलाव और शरीर में हल्की सूजन जैसी चीजें शामिल होती थीं। ये लक्षण भी गर्भावस्था के शुरुआती संकेत माने जाते हैं। इसके अलावा, कुछ पारंपरिक परीक्षणों में महिला के यूरिन को खास जड़ी-बूटियों या अन्य पदार्थों के साथ मिलाकर जांचा जाता था। अगर यूरिन का रंग बदल जाता था या उसमें कोई विशेष प्रतिक्रिया होती थी, तो इसे गर्भावस्था की पुष्टि का संकेत माना जाता था।

घरेलू प्रेग्नेंसी टेस्ट किट का आविष्कार 1969 में हुआ था। 1971 में यह कनाडा में और 1977 में अमेरिका में उपलब्ध हुई। इस तकनीक ने महिलाओं के लिए प्रेग्नेंसी टेस्ट को आसान और सटीक बना दिया। महिलाएं घर बैठे ही अपनी गर्भावस्था की पुष्टि कर सकती हैं, जो मेडिकल साइंस की एक बड़ी उपलब्धि है। बता दें कि के दौर में महिलाओं के लिए प्रेग्नेंसी टेस्ट करना बेहद आसान हो गया है। बाजार में मिलने वाली टेस्ट किट से कुछ ही मिनटों में यह पता लगाया जा सकता है कि कोई महिला गर्भवती है या नहीं।

न्यूज ब्रीफ

नई दिल्ली रायसीना डायलॉग 2025 में नेपाल की विदेशमंत्री आरजू राणा होंगी शामिल

काठमांडू। नई दिल्ली में आयोजित होने वाले रायसीना डायलॉग 2025 में नेपाल का प्रतिनिधित्व विदेशमंत्री डॉ. आरजू राणा करेंगी। वह 16 मार्च को नई दिल्ली पहुंचेंगी। इसका आयोजन भारतीय विदेश मंत्रालय के सहयोग से ऑब्जर्बर रिसर्च फाउंडेशन कर रहा है। 17- 19 मार्च तक आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में दुनिया के कई देशों का प्रतिनिधित्व होगा। नेपाल की विदेशमंत्री डॉ. आरजू ने बताया कि भारत के विदेशमंत्री डॉ. एस जयशंकर सहित अन्य मंत्रियों से मुलाकात के लिए भी समय मांगा गया है। नई दिल्ली स्थित नेपाली दूतावास इसके लिए प्रयास तेज कर दिए हैं। भारत में नेपाल के राजदूत डॉ. शंकर शर्मा ने मंगलवार को भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्री से मुलाकात कर उनकी नई दिल्ली यात्रा की औपचारिक जानकारी दी है। विदेशमंत्री का कार्यभार संभालने के बाद डॉ. आरजू का यह तीसरा भारत दौरा होगा। मंत्री बनने के साथ ही सितंबर 2024 में भारत पहुंचीं डॉ. आरजू ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, विदेशमंत्री जयशंकर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल से भेंट की थी। इसके बाद दिसंबर में भी वह भारत की यात्रा पर रहीं। फरवरी 2025 में मस्कट में इंडिया फाउंडेशन के एक कार्यक्रम में उनकी मुलाकात जयशंकर से हुई थी। विदेशमंत्री डॉ. राणा ने वह भारत के प्रधानमंत्री को नेपाल में मई महीने में होने वाले सागरमाथा संवाद के लिए सरकार की तरफ से निमंत्रण देंगी। पहले इस कार्यक्रम में उप प्रधानमंत्री और वित्तमंत्री विष्णु पौडेल का नाम भेजा गया था। एक अग्निकांड में उनके झुलस जाने के बाद विदेशमंत्री को भेजने का फैसला किया गया।

म्यांमार में 4.7 तीव्रता का भूकंप, लोगों में दहशत का माहौल

यांगून। दुनियाभर में भूकंप की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। इसी कड़ी में, 5 मार्च की सुबह म्यांमार में 4.7 तीव्रता के भूकंप से धरती हिली है। भूकंप के झटके महसूस होते ही लोग घबराकर घरों से बाहर निकल आए। हालांकि, अब तक किसी जान-माल के नुकसान की सूचना नहीं है, लेकिन लगातार आ रहे भूकंपों ने दुनियां के लोगों की चिंता बढ़ा दी है। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) के अनुसार, भूकंप का केंद्र म्यांमार में 32 किलोमीटर की गहराई में स्थित था। भूकंप का असर आसपास के इलाकों में भी महसूस किया गया। अब तक म्यांमार में आए इस भूकंप से किसी बड़ी हानि की खबर नहीं आई है, लेकिन प्रशासन स्थिति पर नजर बनाए हुए है। वैज्ञानिकों की सलाह है कि भूकंप के दौरान घबराने की बजाय सावधानी बरतें और सुरक्षा उपायों का पालन करें। इससे पहले हाल ही में दिल्ली-एनसीआर, हरियाणा, फरीदाबाद, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, तिब्बत और बिहार में भी भूकंप के झटके दर्ज किए गए थे, जिससे लोग आशंकित हैं कि कहीं यह किसी बड़े खतरे का संकेत तो नहीं। विशेषज्ञों के अनुसार, बार-बार आ रहे भूकंप के झटके टेक्टोनिक प्लेट्स की सक्रियता को दर्शाते हैं। हालांकि, कुछ भविष्यवाणियों में दावा किया गया है कि 2025 के बाद पृथ्वी गंभीर प्राकृतिक संकटों का सामना कर सकती है, लेकिन वैज्ञानिक इन दावों को मात्र अटकलें बताते हैं और भूकंप को एक सामान्य भौगोलिक प्रक्रिया मानते हैं। बावजूद इसके, लगातार झटकों से लोगों के मन में डर का माहौल बना हुआ है।

पाक में हथियारबंद लोगों ने ग्वादर जिले में कई वाहनों को आग लगाकर फूंका

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में अज्ञात हथियारबंद लोगों ने कई वाहनों को आग लगाकर फूंक दिया। यह वारदात सोमवार देररात अशांत बलूचिस्तान प्रांत के ग्वादर जिले में हुई है। अधिकारियों के अनुसार, ग्वादर जिले में पसनी और ओरमारा के बीच मकरान तटीय राजमार्ग-10 को अवरुद्ध करने के बाद रसोई गैस टैंकर सहित कई वाहनों में आग लगा दी गई। यह जिला बलूचिस्तान प्रांत के दक्षिण में है। इसकी सीमा दक्षिण में अरब सागर और पश्चिम में ईरान के सिस्तान से लगती है । अधिकारियों ने कहा कि हथियारबंद लोगों के बड़े समूह ने सबसे पहले राजमार्ग के मकोला क्षेत्र में बैरिकेडिंग की। इसके बाद गुजरने वाले वाहनों को रोका। उन्होंने कराची से ईरान लौट रहे खाली एलपीजी टैंकरों सहित कई वाहनों को नियंत्रण लेने के बाद आग लगाकर फूंक दिया। एसएसपी (हाइवे पुलिस) हाफिज बलूच ने घटना की पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि आग लगाकर फूंके गए वाहनों में छह एलपीजी टैंकर और एक हाइवे पुलिस का वाहन शामिल है। तीन एलपीजी टैंकर किसी काम के नहीं बचे हैं।

अमेरिका में स्वर्ण युग शुरू, कांग्रेस के संयुक्त सत्र में बोले ट्रंप

वाशिंगटन

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारतीय समयानुसार बुधवार को अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित किया। दूसरे कार्यकाल के अपने पहले संबोधन में राष्ट्रपति ट्रंप ने अपनी जीत का जश्न मनाया। बोले स्वर्ण युग अब शुरू हुआ है। उन्होंने अपनी सबसे बड़ी उपलब्धियों को भी गिनाया। इनमें अमेरिका की खाड़ी का नाम बदलना, ट्रांसजेंडर विचारधारा पर हमला करना, आप्रवासन पर नकेल कसना और सरकार में विविधता पहल को खत्म करना शामिल है।

ट्रंप ने कहा कि अमेरिका का स्वर्ण युग अभी शुरू हुआ है। यह ऐसा कुछ होगा जो पहले कभी नहीं देखा गया है। इस दौरान रिपब्लिकन ने खड़े होकर जोरदार तालियां बजाईं। इस दौरान कुछ डेमोक्रेट्स ने राष्ट्रपति के संबोधन में खलन डालने की कोशिश की। सार्जेंट ऑफ आर्म्स ने अल ग्रीन (डी. टेक्सास) को बाहर निकाल दिया। कुछ डेमोक्रेटिक सांसद उनका भाषण शुरू होने से पहले ही बाहर चले गए।

राष्ट्रपति ट्रंप ने कांग्रेस से बिडेन-युग के कानून को रद्द करने का आह्वान किया। ट्रंप ने अपने शुरुआती भाषण में आव्रजन उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने कांग्रेस से बच्चों में लिंग-संबंधी सर्जरी पर स्थायी रूप से प्रतिबंध लगाने और अपराधीकरण करने वाला विधेयक पारित करने का आह्वान किया।

उन्होंने खुलासा किया कि काबुल हवाई अड्डे पर 2021 के घातक आत्मघाती हमले की योजना बनाने में शामिल एक अफगान को अमेरिका लाया जा रहा है। ट्रंप ने कहा कि अफगानिस्तान में स्थित इस्लामिक स्टेट शाखा के एक वरिष्ठ सदस्य को पाकिस्तान ने अमेरिकी अधिकारियों को सौंप दिया है। अमेरिकी अधिकारियों ने उसकी पहचान मोहम्मद शरीफुल्लाह के रूप में की है।

डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि दो दिन पहले उन्होंने अंग्रेजी को अमेरिका की आधिकारिक भाषा बनाने के आदेश पर हस्ताक्षर किए हैं। अमेरिका को उन पर भरोसा है। बाइडन अब तक के सबसे खराब राष्ट्रपति हैं। बाइडन के कार्यकाल में घुसपैठ बढ़ी थी। उन्होंने दावा किया कि उनके प्रशासन ने महज 43 दिन में वो कर दिखाया, जो पिछली सरकारों ने चार साल में भी नहीं किया।

नाटो और संयुक्त राष्ट्र छोड़ने पर ट्रंप प्रशासन कर रहा मंथन, ऐसा हुआ तो यूरोप को लगेगा झटका

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कूटनीति के मायने बदल दिए हैं। कूटनीति में यह माना जाता था कि भले ही जमीनी स्तर पर मैत्री कायम न हो, लेकिन औपचारिक भाषा में मर्यादा बनी रहनी चाहिए, लेकिन ट्रंप के सत्ता में आने के बाद से कूटनीतिक भाषा ही बदल गई है। डोनाल्ड ट्रंप को खरा बोलने की आदत है और इसके चलते यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की से उनकी तीखी बहस भी हुई। दो देशों के राष्ट्रपतियों की मुलाकात का यह एकमात्र ऐसा नजारा था, जिसमें इस तरह की बहस देखी गई। रूस से जंग खत्म करने का दबाव डालते हुए ट्रंप आक्रामक थे तो जेलेंस्की भी झुकने को तैयार नहीं थे, लेकिन अमेरिका ने यूक्रेन को दी जाने वाली मदद रोक कर करारा झटका दिया है। अब चिंता में यूरोप भी है। इसकी वजह है कि ट्रंप प्रशासन में इस बात पर मंथन चल रहा है कि अमेरिका को नाटो ही छोड़ देना चाहिए या नहीं। नाटो में ज्यादातर यूरोपीय देश ही हैं। उससे बाहर के कुछ देशों में तुर्की और अमेरिका शामिल हैं। नाटो का संकल्प है कि यदि किसी भी मित्र देश पर हमला होता है तो सभी मिलकर उससे लड़ेंगे। यही वजह है कि यूरोप के ज्यादातर देश नाटो का हिस्सा हैं और किसी भी जंग में अमेरिकी मदद चाहते हैं। वहीं एलन मस्क समेत ट्रंप के ज्यादातर साथियों का कहना है कि अमेरिका को इस गठबंधन से निकल जाना चाहिए।

जयशंकर लंदन में मिले कीर स्टार्मर से, द्विपक्षीय संबंधों और आर्थिक सहयोग बढ़ाने पर चर्चा

लंदन

भारतीय विदेशमंत्री डॉ. एस जयशंकर ने मंगलवार देरशाम यहां ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर से मुलाकात की। इस दौरान जयशंकर ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से उन्हें शुभकामनाएं दीं। दोनों नेताओं के बीच यह मुलाकात 10 डाउनिंग स्ट्रीट में हुई। जयशंकर ने इस मुलाकात का विवरण और कुछ फोटो अपने एक्स हैंडल पर साझा किए हैं।

जयशंकर ने कहा कि ब्रिटेन के प्रधानमंत्री स्टार्मर के साथ उनकी मुलाकात में द्विपक्षीय सहयोग के अलावा रूस-यूक्रेन संघर्ष पर ब्रिटेन के दृष्टिकोण संबंधी मुद्दे रहे। जयशंकर ने मुलाकात के दौरान हुई चर्चा के संदर्भ में एक्स पर लिखा, हमारे द्विपक्षीय, आर्थिक सहयोग को आगे बढ़ाने और लोगों के बीच आदान-प्रदान बढ़ाने पर चर्चा की गई।

प्रधानमंत्री स्टार्मर ने यूक्रेन संघर्ष पर ब्रिटेन के दृष्टिकोण को भी साझा किया।

विदेशमंत्री जयशंकर ने अपनी छह दिवसीय ब्रिटेन और आयरलैंड की आधिकारिक यात्रा के पहले दिन लंदन में कई मंत्रियों से भी मुलाकात की। उन्होंने ब्रिटेन के व्यापार एवं वाणिज्य मंत्री जोनाथन रेनॉल्ड्स और गृहमंत्री यवेट कूपर के साथ भी भेंटवार्ता की।

जयशंकर और यवेट कूपर ने मुलाकात में ट्रैफिकिंग, आतंकवाद और अन्य सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए सहयोग के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं शैक्षिक आदान-प्रदान पर चर्चा की। इसके बाद वह अपने समकक्ष डेविड लैमी से मिले। जयशंकर ने शेवेनिंग हाउस में गर्मजोशी से स्वागत के लिए उनका आभार जताया। जयशंकर ने कहा कि लैमी के साथ भारत के शेवेनिंग स्कॉलर्स से मिलकर बहुत अच्छा लगा।

रहस्यमयी बीमारी से 50 से अधिक लोगों की मौत

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, उत्तर-पश्चिमी कांगो में एक रहस्यमयी बीमारी ने लोगों में दहशत फैला दी है। अब तक इस बीमारी से 50 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 419 से ज्यादा मामले सामने आ चुके हैं। बीमारी के लक्षण दिखने के 48 घंटे के भीतर ही मरीजों की मौत हो रही है। यह प्रकोप 21 जनवरी को शुरू हुआ था और इसके फैलने की रफ्तार को लेकर वैज्ञानिकों में भी चिंता बढ़ गई है। डब्ल्यूएचओके अफ्रीका कार्यालय ने बताया कि इस बीमारी का पहला मामला बोलोको शहर में तब सामने आया जब तीन बच्चों ने चमगादड़ का सेवन किया था।

अमेरिका से निष्कासित दो दर्जन नेपाली नागरिकों को लेकर विमान काठमांडू पहुंचा

काठमांडू

अमेरिकी प्रशासन के अवैध आप्रवासियों के निष्कासन की नीति के तहत करीब दो दर्जन नेपाली नागरिकों को लेकर एक चार्टर्ड विमान काठमांडू के एयरपोर्ट पहुंचा।

त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय विमानस्थल पर उतरे विमान से 25 नेपाली नागरिकों को लाया गया है। नेपाल इमिग्रेशन डिपार्टमेंट के निदेशक ईश्वरी दत्त ने बताया कि मंगलवार को काठमांडू स्थित अमेरिकी दूतावास ने उन्हें यह जानकारी दी थी। उन्होंने बताया कि वापस आए सभी नेपाली नागरिक अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे थे।

काठमांडू स्थित त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा के सुरक्षा प्रमुख नेपाल पुलिस के एसएसपी कृष्ण हरि पोखरेल ने बताया कि ग्रिफिन एयर का चार्टर्ड विमान जीआरपी 23 पहुंचा। उसमें 25 नेपाली नागरिक थे। इन सभी को इमिग्रेशन डिपार्टमेंट में लाया गया है।

यह पहली बार है जब अमेरिका से निष्कासित नेपाली नागरिकों को चार्टर्ड विमान से नेपाल भेजा गया है। ट्रंप की वापसी के बाद से अब तक 50 से अधिक नेपाली नागरिकों को निष्कासित कर डिपोर्ट किया जा चुका है।

काहिरा सम्मेलन में मिस्र की 53 अरब डॉलर की गाजा पुनर्निर्माण योजना का समर्थन

काहिरा (मिस्र)

अरब लीग शिखर सम्मेलन ने गाजा पट्टी के पुनर्निर्माण पर मिस्र की योजना पर मुहर लगा दी। सम्मेलन में हिस्सा लेने पहुंचे नेताओं ने मिस्र की योजना को स्वीकार करते हुए अंतरराष्ट्रीय समर्थन का आह्वान किया। मिस्र ने गाजा के पुनर्निर्माण के लिए कुल 53 अरब डॉलर की योजना प्रस्तुत की। इसे पूरा करने के लिए पांच साल की समय सीमा तय की गई है।

इस आपातकालीन अरब लीग शिखर सम्मेलन के समापन वक्तव्य में गाजा के भविष्य और इसके पुनर्निर्माण के लिए मिस्र की योजना को अपनाया गया है। बयान में अंतरराष्ट्रीय समुदाय और वित्तीय संस्थानों से योजना के लिए तेजी से समर्थन प्रदान करने का आह्वान किया गया है।

मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सीसी ने अरब देशों के नेताओं से गाजा पट्टी के पुनर्निर्माण के लिए मिस्र की योजना को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि फिलिस्तीनी पुनर्निर्माण के समय अपनी भूमि पर बने रहें। सीसी ने कहा कि गाजा में इजराइली आक्रामकता ऐतिहासिक भूमि से जबरन विस्थापन चिंताजनक है। इस शिखर सम्मेलन में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के मध्य पूर्वी रिवेरा में पुनर्विकास के सुझाव की निंदा की गई। मिस्र की 112 पेज की योजना के अनुसार, शुरू के छह माह में मलबे को साफ करने और अस्थायी आवास स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। पुनर्निर्माण के पहले चरण में दो साल लगने की उम्मीद है और इसमें 200,000 आवास इकाइयों का निर्माण शामिल होगा। इसकी अनुमानित लागत 20 अरब डॉलर होगी। दूसरे चरण का बजट 30 अरब डॉलर है। यह ढाई साल तक चलेगा।

यूक्रेन में है कीमती खनिजों का भंडार, इसलिए ट्रंप के सामने दिखाई दंबगई, पूरा यूरोप जेलेंस्की के साथ खड़ा, लोग दे रहे हिम्मत की दाद

कीव। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के बीच नोंकझोंक की खबरें पूरी दुनिया में छाई हुई हैं। इस मसले पर दुनिया बंट चुकी है। कुछ लोग जेलेंस्की की हिम्मत की दाद दे रहे हैं तो कुछ इसे उनकी सबसे बड़ी कूटनीतिक गलती बता रहे हैं। इस वक्त पूरा यूरोप जेलेंस्की के साथ है। ब्रिटेन के नेतृत्व में यूरोपीय देशों ने उनको बड़ी सहायता देने की घोषणा की है। अमेरिका के साथ रिश्तों को लेकर उनके रुख में नरमी आई है। एक रिपोर्ट के मुताबिक यूक्रेन में दुनिया के सबसे कीमती खनिज पदार्थों का अकूत भंडार है. इसमें ग्रेफाइट, मैग्निशियम, लोहा, बेरीलियम, लिथियम, यूरेनियम और टिटैनियम शामिल हैं। ये ऐसे खनीज पदार्थ हैं जो मौजूद वक्त में किसी भी देश की किस्मत बदल सकते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक इन खनिजों का कुल मूल्य करीब 15 ट्रिलियन डॉलर है। इस राशि की व्यापकता को आप इस तरह से समझ सकते हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था का आकार करीब 3.5 ट्रिलियन डॉलर है यानी यूक्रेन का ये भंडार भारत की इकोनॉमी से तीन गुना बड़ा है। अमेरिका समेत रूस और दुनिया के अन्य देशों की नजर यूक्रेन की संपत्ति पर है। जेलेंस्की के अमेरिका दौरे के दौरान उनके साथ ट्रंप ने जो खनिज डील की बात कही थी वह इससे जुड़ी थी। हालांकि यूक्रेन ने अब अपनी सुरक्षा की गारंटी मिलने के बाद अमेरिका के साथ ऐसी डील करने की सहमति जता दी है। सबसे बड़ी बात यह है कि अमेरिका बिना किसी स्वार्थ के यूक्रेन की सहायता नहीं कर रहा है।